उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग एल.टी. ग्रेड परीक्षा 2018

हिन्दी

हल प्रश्न पत्र

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रथमतः 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका में किस शीर्षक से प्रकाशित हुआ था–

(a) हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका
(b) हिन्दी साहित्य की भूमिका
(c) हिन्दी साहित्य का विकास
(d) हिन्दी साहित्य का सागर

उत्तर (c): आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रथमतः 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में सन् 1929 ई. में 'हिन्दी साहित्य का विकास' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' के लेखक आ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। इनके तीन इतिहास ग्रंथ हैं- हिन्दी साहित्यः उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य का आदिकाल।

2. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ के लेखक रामविलास शर्मा नहीं हैं–

(a) कविता के नए प्रतिमान
(b) भाषा और समाज
(c) नई कविता और अस्तित्ववाद
(d) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद

उत्तर (a): 'कविता के नये प्रतिमान' आलोचनात्मक ग्रंथ के लेखक रामविलास शर्मा नहीं हैं बल्कि यह ग्रंथ नामवर सिंह द्वारा लिखा गया है। जबकि–(1) भाषा और समाज (2) नई कविता और अस्तित्ववाद (3) भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद आदि रचनाएँ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित हैं।

3. हिन्दी के किस इतिहासकार के मतानुसार 'शालिभद्र सूरि' हिन्दी के प्रथम कवि हैं–

(a) डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा

उत्तर (a): डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने शालिभद्र सूरि को हिन्दी के प्रथम कवि के रूप में स्वीकार किया है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार हिन्दी के प्रथम कवि इस प्रकार हैं–

विद्वान	**प्रथम कवि**
राहुल सांकृत्यायन	सरहपा
डॉ. रामकुमार वर्मा	स्वयंभू
शिव सिंह सेंगर	पुष्य या पुण्ड
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	अब्दुर्रहमान (अद्दहमाण)

4. 'राउलवेल' किस तरह की रचना है–

(a) गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू
(b) शुद्ध काव्य
(c) नाटक
(d) प्रेमाख्यान प्रबंधकाव्य

उत्तर (a): आदिकालीन ग्रंथ 'राउलवेल' गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू कृति है। जिसके रचनाकार कवि रोडा हैं। राउलवेल शिलांकित कृति है।

5. ''मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो, तो हिन्दवी में पूछो, जिससे कि मैं कुछ अद्भुत बातें बता सकूँ।'' यह किसका कथन है–

(a) अमीर खुसरो (b) कण्हपा
(c) मौलवी करीम (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (a): दिया गया कथन–''मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो, तो हिन्दवी में पूछो, जिससे कि मैं कुछ अद्भुत बातें बता सकूँ।'' यह कथन अमीर खुसरो का है।

6. निम्नलिखित में से किसका संबंध सिद्ध साहित्य से नहीं है–

(a) सरहपा (b) कुक्कुरिपा
(c) शबरपा (d) गोपीचंद

उत्तर (d): गोपीचन्द का सम्बन्ध सिद्ध साहित्य से नहीं है जबकि सरहपा, कुक्कुरिपा एवं शबरपा का सम्बन्ध सिद्ध साहित्य से है।

7. नाथ संप्रदाय में 'हठयोग' का क्या अर्थ है–

(a) कठिन साधना
(b) अडिग योग साधना
(c) हठपूर्वक योग
(d) 'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चन्द्र, दोनों का योग

उत्तर (d): नाथ सम्प्रदाय में हठयोग –'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चन्द्र, दोनों के योग को ही हठयोग कहते है।

8. ''केशव कहि न जाइ का कहिए''–पंक्ति के रचनाकार हैं–

(a) सूरदास (b) रहीम
(c) केशवदास (d) तुलसीदास

Adda247

Test Prime

ALL EXAMS, ONE SUBSCRIPTION

80,000+ Mock Tests

Personalised Report Card

Unlimited Re-Attempt

600+ Exam Covered

20,000+ Previous Year Papers

500% Refund

IBPS

NABARD

ATTEMPT FREE MOCK NOW

Adda247 GET IT ON Google Play

उत्तर (d): दी गयी पंक्ति ''केशव कहि न जाइ का कहिए'' के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास हैं। यह पंक्ति तुलसी कृत विनय पत्रिका ग्रंथ से ली गयी है। अन्य कवियों की पंक्तियाँ हैं–

कवि	पंक्ति
सूरदास	चरण कमल बन्दौ हरि राई।
रहीम	गोद लिए हुलसी फिरै तुलसी सो सुत होय।
केशव	बासर की संपति उलूक ज्यों न चितवत।

9. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना किसे मानते हैं–

(a) सत्यवती कथा (b) चंदायन
(c) मृगावती (d) हंसावली

उत्तर (c): आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना कुतुबन कृत मृगावती (1501 ई.) को माना है। जबकि राम कुमार वर्मा ने मुल्ला दाऊद कृत चन्दायन को प्रथम प्रेमाख्यानक ग्रंथ माना है। गणपति चन्द्र गुप्त असाइत कृत 'हंसावली' को और हजारी प्रसाद द्विवेदी ईश्वरदास कृत 'सत्यवती कथा' को प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा की पहली रचना मानते हैं।

10. निम्नलिखित में से कौन स्वामी रामानंद का शिष्य नहीं था–

(a) अनंतानंद (b) सुखानंद
(c) नरहर्यानंद (d) रैदास

उत्तर (*): स्वामी रामानन्द के शिष्यों में अनंतानन्द, सुखानंद, नरहर्यानंद तथा रैदास सभी हैं। अतः पूछा गया प्रश्न त्रुटिपूर्ण है।

11. ''गोद लिए हुलसी फिरै तुलसी सो सुत होय।'' पंक्ति का लेखक कौन-सा भक्त कवि है–

(a) सूरदास (b) रसखान
(c) रहीम (d) नरहरिदास

उत्तर (c): दी गयी पंक्ति ''गोद लिए हुलसी फिरै तुलसी सो सुत होय।'' के रचयिता रहीमदास हैं। रहीम-तुलसी के मित्र थे। यह पंक्ति तुलसी के सन्दर्भ में ही रहीम ने कही है। रहीम ने यह पंक्ति तुलसीदास की 'सुरतिय नरतिय नागतिय सब चाहत अस होय' के प्रत्युत्तर में कही है।

12. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (काव्यपंक्तियाँ)	सूची-II (रचनाकार)
A. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं	1. रसखान
B. बसो म्हारे नैनन में नंदलाल	2. मीरा
C. भक्तन को कहा सीकरी सों काम	3. सूरदास
D. प्रीति कर दीन्हीं गरै छुरी	4. कुम्भनदास

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	2	3	1
(c)	1	2	4	3
(d)	2	4	1	3

उत्तर (c):

काव्य पंक्तियाँ	रचनाकार
A. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं	1. रसखान
B. बसौ म्हारे नैनन में नन्दलाल	2. मीराबाई
C. भक्तन को कहाँ सीकरी सो काम	3. कुम्भनदास
D. प्रीति कर दीन्हीं गरै छुरी	4. सूरदास

13. सूरदास के विषय में कौन-सा कथन गलत है–

(a) सूरदास को सभी विद्वान जन्मान्ध मानते हैं।
(b) सूरदास श्रीनाथ मंदिर, वृन्दावन में कीर्तन करते थे।
(c) सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
(d) ''प्रभु हौं सब पतितन को राजा।
परनिन्दा मुख पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा।''
–पंक्तियाँ सूरदास द्वारा लिखित हैं।

उत्तर (a): सूरदास के विषय में दिये गये कथनों में गलत कथन है– ''सूरदास को सभी विद्वान जन्मान्ध मानते हैं।'' क्योंकि कुछ आलोचक (विशेषतः हजारीप्रसाद द्विवेदी) ऐसे हैं जो सूर को जन्मान्ध नहीं मानते हैं।

14. निम्नलिखित काव्यपंक्ति किस रचनाकार की है–
''प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।''

(a) नानकदेव (b) कबीर
(c) रैदास (d) दादूदयाल

उत्तर (c): प्रस्तुत पंक्ति–''प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।'' के रचनाकार संत कवि रैदास हैं। अन्य संत कवियों की प्रमुख पंक्तियाँ हैं–

जो नर दुख में दुख नहि मानै – नानकदेव
मैं कहता हूँ आखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी - कबीरदास
अपना मस्तक काटिकै वीर हुआ कबीर – दादू दयाल

15. ''छार उठाय लीन्ह एक मूँठी। दीन्ह उड़ाइ पिरिथमी झूठी।'' यह पंक्ति किस ग्रंथ से ली गई है–

(a) पद्मावत (b) चन्दायन
(c) आखिरी कलाम (d) रामचरितमानस

Adda247 GET IT ON Google Play

उत्तर (a): ''छार उठाय लीन्ह एक मूँठी।
दीन्ह उड़ाइ पिरथिमी झूठी।।''
यह पंक्ति जायसी कृत 'पद्मावत' महाकाव्य से ली गई है। अन्य रचनाओं के विवरण इस प्रकार हैं–

रचना	**रचनाकार**
चन्दायन	मुल्ला दाऊद
आखिरी कलाम	जायसी
रामचरितमानस	तुलसीदास

16. अधोलिखित स्थापना (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए–
स्थापना (A) :
तुलसी के मत में–
''निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोय।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होय।''
तर्क (R) :
क्योंकि सगुण आकार की उपासना और अनुभव के दायरे में लाना सहज है, जबकि निर्गुण निराकार की उपासना और अनुभूति नितांत कठिन।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–
कूट :
(a) A और R दोनों सही हैं
(b) A सही है, R गलत
(c) A गलत है R सही
(d) A और R दोनों गलत हैं

उत्तर (b): स्थापना (A) तुलसी के मत में–
''निर्गुण रूप .... भ्रम होय।'' कथन सत्य है और तर्क (R) गलत 'क्योंकि सगुण आकार को उपासना और अनुभव के दायरे में लाना सहज है, जबकि निर्गुण निराकार की उपासना और अनुभूति नितांत कठिन।' तर्क गलत है क्योंकि तुलसी के मतानुसार सही तर्क यह है कि निर्गुण भक्ति अत्यन्त सरल है तथा सगुण भक्ति को प्राप्त करना या जानना कठिन है। अतः कथन A सही तथा तर्क R गलत है।

17. कबीर के बीजक पर रची गई 'तिर्ज्या' टीका किसकी है–
(a) पूरनदास
(b) जगजीवनदास
(c) भगवानदास
(d) पल्टू साहब

उत्तर (a): कबीर के बीजक पर रची गयी 'तिर्ज्या' टीका के रचनाकार 'पूरनदास' हैं। जबकि जगजीवनदास, भगवानदास तथा पल्टू साहब तीनों नाम असंगत हैं।

18. निम्न कवियों और उनकी कृतियों में कौन-सा सुमेलित नहीं है–

	कवि	**काव्यकृति**
(a)	विद्यापति	पदावली
(b)	नाभादास	भक्तमाल
(c)	नंददास	यमुनाष्टक
(d)	सुंदरदास	सुंदर विलास

उत्तर (c): कवियों और उनकी कृतियों में नन्ददास–यमुनाष्टक सुमेलित नहीं है–सही सुमेलित क्रम इस प्रकार हैं–

कवि	**काव्यकृति**
विद्यापति –	पदावली
नाभादास –	भक्तमाल
नन्ददास –	रासपंचाध्यायी
सुन्दरदास –	सुन्दर विलास

⇒ 'यमुनाष्टक' हितहरिवंश एवं विट्ठलनाथ दोनों की रचना है।

19. ''भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें प्रखर थी, इसमें संदेह नहीं।'' पंक्तियों के लेखक हैं–
(a) डॉ. नगेन्द्र
(b) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(c) डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
(d) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तर (b): उक्त कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कबीर के सन्दर्भ में लिखते हैं कि–''भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें प्रखर थी, इसमें संदेह नहीं।''

20. 'रामायण महानाटक' के लेखक हैं–
(a) प्राणचंद चौहान (b) केशवदास
(c) हृदयराम (d) अग्रदास

उत्तर (a): 'रामायण महानाटक' के लेखक प्राणचन्द चौहान हैं।

रचनाकार	**रचना**
केशवदास	रामचन्द्रिका
हृदयराम	हनुमन्नाटक
अग्रदास	ध्यानमंजरी

21. निम्नलिखित तथ्यों को कालक्रमानुसार लिखिए–
1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा।
2. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की।
3. अज्ञेय द्वारा 'तारसप्तक' का प्रकाशन किया गया।
4. जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' की रचना की।

Adda247 GET IT ON Google Play

निम्नलिखित कूट के आधार पर सही उत्तर लिखिए–

(a) 1, 2, 4, 3 (b) 2, 1, 3, 4
(c) 2, 1, 4, 3 (d) 4, 2, 3, 1

उत्तर (c): कालक्रमानुसार क्रम इस प्रकार है–

रचनाकार	रचना	प्रकाशन वर्ष
तुलसीदास	रामचरितमानस	1574 ई.
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	1929 ई.
अज्ञेय	तारसप्तक	1943 ई.
जयशंकर प्रसाद	कामायनी	1935 ई.

22. ''कबीर ने जिस प्रकार एक निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदांत का पल्ला पकड़ा, उसी प्रकार उस निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्त्व लिया और अपना 'निर्गुण' धूमधाम से निकाला।'' यह कथन किसका है–

(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) नामवर सिंह
(c) पुरुषोत्तम अग्रवाल
(d) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

उत्तर (d): आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि–''कबीर ने जिस प्रकार एक निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदांत का पल्ला पकड़ा, उसी प्रकार उस निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्त्व लिया और अपना 'निर्गुण' धूमधाम से निकाला।''

23. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'उत्तरमध्यकाल' को क्या नाम दिया–

(a) शृंगारकाल (b) अलंकृत काल
(c) रीतिकाल (d) मध्यकाल

उत्तर (c): आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उत्तरमध्यकाल को रीतिकाल (समय-सं. 1700–सं. 1900 तक) नाम दिया है जबकि उत्तर मध्यकाल को शृंगार काल नाम आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने तथा अलंकृत काल नाम मिश्रबन्धु ने दिया है।

24. ''यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था, वैसा और किसी कवि का नहीं।'' रामचंद्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के संबंध में है–

(a) कबीरदास (b) तुलसीदास
(c) भारतेन्दु हरिश्चंद्र (d) घनानंद

उत्तर (d): आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ हिन्दी साहित्य का इतिहास में रीतिकालीन कवि घनानन्द के भाषा के सन्दर्भ में लिखते हैं कि–

''यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था, वैसा और किसी कवि का नहीं।''

25. रीतिकाल को 'अलंकृत काल' किस इतिहासकार ने कहा है–

(a) मिश्रबंधु (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) रामचंद्र शुक्ल (d) रामकुमार वर्मा

उत्तर (a): रीतिकाल को 'अलंकृत काल' मिश्रबन्धु ने कहा है। अन्य विवरण इस प्रकार है–

इतिहासकार	रीतिकाल का नाम
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	शृंगारकाल
रामचन्द्र शुक्ल	रीतिकाल
रामकुमार वर्मा	रीतिकाल
रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	कलाकाल

26. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भिखारीदास की नहीं है–

(a) रससारांश (b) काव्यनिर्णय
(c) शृंगार निर्णय (d) भाषाभूषण

उत्तर (d): भाषा भूषण रचना भिखारीदास की नहीं है बल्कि 'जसवन्त सिंह' की है। जबकि रस सारांश, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय भिखारीदास की रचनाएं हैं।

27. ''हिन्दी रीतिग्रंथों की परम्परा चिन्तामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए।'' यह कथन किसका है–

(a) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(b) रामचंद्र शुक्ल
(c) मिश्रबंधु
(d) रामकुमार वर्मा

उत्तर (b): ''हिन्दी रीतिग्रंथों की परम्परा चिन्तामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए।'' यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में रीतिकाल का सामान्य परिचय देते हुए कहा है।

28. भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का सर्वाधिक उपयोग निम्नलिखित में से किस कवि ने किया है–

(a) बिहारी (b) चिन्तामणि
(c) भूषण (d) घनानंद

उत्तर (a): भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का सर्वाधिक उपयोग रीति-सिद्ध कवि बिहारीलाल ने किया है। बिहारी ने 719 दोहों का एक मात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' की रचना की हैं। चिंतामणि तथा भूषण दोनों ही रीतिबद्ध कवि हैं और घनानन्द रीतिमुक्त कवि हैं।

29. ''कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।'' यह प्रशंसात्मक उक्ति किसने लिखी है–

Adda247 GET IT ON Google Play

(a) मैथिलीशरण गुप्त
(b) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) रामचंद्र शुक्ल
(d) बालमुकुन्द गुप्त

उत्तर (b): अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने रामकाव्य परम्परा के श्रेष्ठ कवि तुलसीदास की प्रशंसा में यह उक्ति लिखी हैं–
''कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।''

30. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (कविता)	सूची-II (रचनाकार)
A. जूही की कली	1. अज्ञेय
B. नौका विहार	2. माखनलाल चतुर्वेदी
C. नदी के द्वीप	3. सुमित्रानंदन पंत
D. पुष्प की अभिलाषा	4. निराला

	A	B	C	D
(a)	4	3	1	2
(b)	4	1	2	3
(c)	3	2	1	4
(d)	1	4	3	2

उत्तर (a): कविताएँ एवं कवियों का सही सुमेल है–

कविता	रचनाकार
A. जूही की कली	1. निराला
B. नौका विहार	2. सुमित्रानंदन पंत
C. नदी के द्वीप	3. अज्ञेय
D. पुष्प की अभिलाषा	4. माखनलाल चतुर्वेदी

31. ''गिरा हो जाती है सनयन, नयन करते नीरव भाषण''–जैसे विरोधाभासी चमत्कार का सौन्दर्य किसकी कविता में प्राप्त है–
(a) निराला (b) पंत
(c) प्रसाद (d) महादेवी

उत्तर (b): ''गिरा हो जाती है सनयन, नयन करते नीरव भाषण''–जैसे विरोधाभासी चमत्कार का सौन्दर्य सुमित्रानन्दन पंत की कविता में प्राप्त है। पंत की प्रसिद्ध रचना– पल्लव, ग्रंथि, गुंजन, चिदम्बरा आदि हैं। निराला ने जूही की कली, अनामिका, राम की शक्तिपूजा तथा गीतिका आदि काव्य ग्रंथ लिखे। वहीं प्रसाद ने उर्वशी, झरना, लहर, आँसू तथा कामायनी जैसे काव्यों की रचना की। जबकि महादेवी वर्मा ने यामा, नीरजा, नीहार, रश्मि आदि रचनाएं लिखीं।

32. 'प्रवासी के गीत' के रचनाकार है–
(a) नरेन्द्र शर्मा
(b) हरिवंशराय 'बच्चन'
(c) भगवतीचरण वर्मा
(d) हरिकृष्ण प्रेमी

उत्तर (a): 'प्रवासी के गीत' के रचनाकार नरेन्द्र शर्मा हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–(1) प्रभातफेरी (2) पलाशवन (3) मिट्टी और फूल (4) हंसमाला (5) रक्तचन्दन आदि। मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश नामक ग्रंथ हरिवंश राय बच्चन ने लिखा और हरिकृष्ण प्रेमी ने अग्निगान, वन्दना के बोल नामक काव्य लिखें हैं।

33. ''मैं उनका आदर्श कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे,
पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे।
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा
मन में उमंग जिन्हें चिरकाल कलपना होगा।''
उपर्युक्त पंक्तियाँ 'दिनकर' की किस रचना की हैं–
(a) कुरुक्षेत्र (b) रश्मिरथी
(c) सामधेनी (d) परशुराम की प्रतीक्षा

उत्तर (b): प्रस्तुत पंक्ति– ''मैं उनका आदर्श कहीं .... जिन्हें चिरकाल कलपना होगा।''
रामधारी सिंह दिनकर की रचना 'रश्मिरथी' से ली गयी है। यह रचना महारथी 'कर्ण' के जीवन पर आधारित हैं। दिनकर कृत 'कुरुक्षेत्र' को आधुनिक युग की गीता कहा गया है। दिनकर को 'उर्वशी' के लिए 1972 ई0 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

34. 'सूरज किरन की छाँव'–आंचलिक उपन्यास के लेखक हैं–
(a) राजेन्द्र अवस्थी (b) शैलेश मटियानी
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) उदयशंकर भट्ट

उत्तर (a): 'सूरज किरन की छाँव' आँचलिक उपन्यास के लेखक राजेन्द्र अवस्थी हैं। इनके अन्य उपन्यास–जंगल के फूल, बहता हुआ पानी, बीमार शहर, मछली बाजार आदि हैं। जबकि कबूतर खाना, हौलदार, चौथी मुट्ठी, दो बूँद जल, अर्धकुम्भ की यात्रा आदि शैलेश मटियानी के उपन्यास हैं।

35. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना शिवदान सिंह चौहान की है–
(a) हिन्दी साहित्य की जनवादी परम्परा
(b) जनांतिक
(c) प्रेमचंद! विरासत का सवाल
(d) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष

उत्तर (d): 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' (1954) शिवदान सिंह चौहान की रचना है। अन्य रचनाएँ हैं–

रचना	रचनाकार
हिन्दी साहित्य की जनवादी परम्परा (1953)	प्रकाशचन्द्र गुप्त
जनांतिक (1981)	नेमिचन्द्र जैन
प्रेमचन्द विरासत का सवाल (1981)	शिव कुमार मिश्र

36. 'एक और द्रोणाचार्य' किसकी नाट्यकृति है–

(a) सुरेन्द्र वर्मा (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) शंकर शेष (d) भीष्म साहनी

उत्तर (c): 'एक और द्रोणाचार्य' नाट्यकृति के लेखक शंकर शेष हैं। इनके अन्य नाटक हैं–घरौंदा, अरे मायावी सरोवर, कोमल गंधार, पोस्टर, बिन बाती के दीप आदि। अन्य नाटककार हैं–

सुरेन्द्र वर्मा के नाटक– (1) द्रौपदी, (2) सेतुबंध, (3) आठवाँ सर्ग, (4) एक दूनी एक आदि।

लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक– (1) अन्धा कुआँ, (2) मादा कैक्टस, (3) सूखा सरोवर, (4) रक्तकमल, (5) सूर्यमूख, (6) कर्फ्यू आदि।

भीष्म साहनी के नाटक–(1) हानूश, (2) माधवी, (3) मुआवजे, (4) कबिरा खड़ा बाजार में, (5) रंग दे बसंती चोला आदि।

37. हिन्दी आलोचना में शुक्ल जी की चिन्तनात्मक मान्यताओं को सबसे प्रबल समर्थन किसने दिया–

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) मुक्तिबोध (d) रामविलास शर्मा

उत्तर (b): हिन्दी आलोचना में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की चिन्तनात्मक मान्यताओं को सबसे प्रबल समर्थन आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दिया है। जबकि डॉ. नगेन्द्र, मुक्तिबोध तथा रामविलास शर्मा शुक्ल की मान्यताओं का प्रबल समर्थन नहीं करते हैं।

38. आधुनिक एकांकी के जनक माने जाते हैं–

(a) उदयशंकर भट्ट (b) जयशंकर प्रसाद
(c) रामकुमार वर्मा (d) जगदीशचंद्र माथुर

उत्तर (c): आधुनिक एकांकी के जनक डॉ. रामकुमार वर्मा माने जाते हैं। हिन्दी में सर्वप्रथम पश्चिमी नाट्य विधान को ध्यान में रखकर डॉ. रामकुमार वर्मा ने सन् 1930 ई. में 'बादल की मृत्यु' नामक एकांकी की रचना की।

लेखक	प्रसिद्ध एकांकी
जयशंकर प्रसाद	एक घूंट (1929)
उदशंकर भट्ट	स्त्री का हृदय
रामकुमार वर्मा	बादल की मृत्यु
जगदीशचन्द्र माथुर	रीढ़ की हड्डी

39. 'सूरदास' प्रेमचंद के किस उपन्यास का पात्र है–

(a) वरदान (b) रंगभूमि
(c) गोदान (d) प्रतिज्ञा

उत्तर (b): 'सूरदास' प्रेमचन्द के रंगभूमि उपन्यास का प्रमुख पात्र है। रंगभूमि उपन्यास का प्रकाशन 1925 ई. में हुआ जिसके अन्य पात्र हैं– सोफिया, महेन्द्र कुमार, विनय, इन्दु, जाह्नवी आदि। गोदान के प्रमुख पात्र–होरी, धनिया, गोबर, मातादीन, दातादीन, रायसाहब आदि हैं।

40. केवल छः निबंध लिखकर निम्नलिखित में से किस लेखक ने हिन्दी जगत में ख्याति अर्जित की है–

(a) माधवप्रसाद मिश्र (b) पूर्ण सिंह
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) गोविन्दनारायण मिश्र

उत्तर (b): सरदार पूर्ण सिंह केवल छः निबन्ध लिखकर हिन्दी साहित्य जगत में ख्याति अर्जित की। उनके निबन्ध इस प्रकार हैं– (1) आचरण की सभ्यता, (2) मजदूरी और प्रेम, (3) सच्ची वीरता, (4) पवित्रता, (5) कन्यादान, (6) अमेरिका का मस्त कवि वाल्ट ह्विटमैन।

41. जयशंकर प्रसाद के किस नाटक में कार्नेलिया विदेशी पात्र हैं–

(a) स्कंदगुप्त (b) चंद्रगुप्त
(c) विशाख (d) अजातशत्रु

उत्तर (b): जयशंकर प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' नाटक में कार्नेलिया नामक विदेशी पात्र है। इस नाटक के अन्य पात्र-चन्द्रगुप्त, अलका, राक्षस, चाणक्य आदि हैं। यह एक ऐतिहासिक नाटक है। स्कंदगुप्त के प्रमुख पात्र हैं– पृथ्वीसेन, स्कन्दगुप्त, भट्टार्क, देवसेना, कुमारगुप्त आदि।

42. 'अर्द्धनारीश्वर' निबंध-संग्रह के रचनाकार का नाम है–

(a) शान्तिप्रिय द्विवेदी (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) अज्ञेय (d) वासुदेवशरण अग्रवाल

उत्तर (b): 'अर्द्धनारीश्वर' निबन्ध संग्रह के रचनाकार रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। दिनकर के अन्य निबन्ध हैं– (1) मिट्टी की ओर (2) उजली आग (3) रेती के फूल (4) वट पीपल (5) आधुनिकता बोध आदि। अन्य रचनाकारों के निबन्ध इस प्रकार हैं-

शांतिप्रिय द्विवेदी– (1) कवि और काव्य (2) संचारिणी (3) जीवन यात्रा।

अज्ञेय– (1) त्रिशंकु (2) आत्मनेपद (3) आलबाल (4) अद्यतन (5) लिखि कागद कोरे आदि।

वासुदेवशरण अग्रवाल– (1) पृथ्वी पुत्र (2) मातृभूमि (3) कला और संस्कृति (4) वेद विद्या आदि।

43. 'सीट नं. 6' किस लेखिका का कहानी संग्रह है–

(a) मन्नू भंडारी (b) मंजुल भगत
(c) ममता कालिया (d) इंदुबाली

उत्तर (c): 'सीट नं. 6' कहानी संग्रह की लेखिका ममता कालिया हैं। इनकी अन्य कहानियाँ हैं– (1) छुटकारा (2) एक अदद औरत (3) प्रतिदिन (4) मुखौटा आदि। अन्य लेखिकाओं की कहानियाँ हैं-

मन्नू भण्डारी –(1) मैं हार गई (2) त्रिशंकु (3) यही सच है (4) एक प्लेट सैलाब आदि

मंजुल भगत –(1) गुलमोहर के गुच्छे (2) टूटा हुआ इन्द्रधनुष (3) सफेद कौआ (4) अन्तिम बयान आदि।

इन्दुबाली –(1) धरातल (2) चुभन (3) पाँचवाँ युग मैं खरगोश होना चाहती हूँ आदि।

44. निम्नलिखित में से कौन-सा कहानी संग्रह नासिरा शर्मा का है–

(a) चल खुसरो घर आपने (b) स्वीमिंग पूल
(c) बोलने वाली औरत (d) पत्थर गली

उत्तर (d): 'पत्थर गली' कहानी संग्रह नासिरा शर्मा का है। इनकी अन्य कहानियाँ निम्न हैं–(1) शमी कागज (2) इब्ने मरियम (3) खुदा की वापसी (4) इंसानी नस्ल (5) दूसरा ताजमहल आदि।

45. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है–

(a) 'मन पवन की नौका'–कुबेरनाथ राय का निबंध संग्रह है।
(b) 'विचार और वितर्क'–हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध संग्रह है।
(c) 'कौन तू फुलवा बीनन हारी'–विवेकीराय का निबंध है।
(d) चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' द्विवेदी युग के निबंधकार हैं।

उत्तर (c): दिये गये कथनों में ''कौन तू फुलवा बीनन हारी''–विवेकीराय का निबन्ध है असत्य कथन है। कौन तू फुलवा बीनन हारी–विद्यानिवास मिश्र का निबन्ध है।

46. प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन कहाँ हुआ था–

(a) दिल्ली (b) नागपुर
(c) मॉरीशस (d) लंदन

उत्तर (b): प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत के महाराष्ट्र राज्य में स्थित शहर 'नागपुर' में 10-12 जनवरी 1975 ई. को हुआ था। अन्य सम्मेलन इस प्रकार है–

क्रम	वर्ष	शहर
द्वितीय	1976	पोर्टलुई (मॉरीशस)
तृतीय	1983	दिल्ली (भारत)
चतुर्थ	1993	पोर्टलुई (मॉरीशस)
पंचम	1996	पोर्ट ऑफ स्पेन (ट्रिनिडॉड एवं टोबेगो)
छठा	1999	लंदन (ब्रिटेन)
सातवाँ	2003	परामारिबो (सूरीनाम)
आठवाँ	2007	न्यूयार्क (अमेरिका)
नवाँ	2012	जोहान्सवर्ग (दक्षिण अफ्रीका)
दसवाँ	2015	भोपाल (भारत)
ग्यारहवाँ	2018	पोर्टलुई (मॉरीशस)

47. निम्नलिखित में विष्णु प्रभाकर लिखित यात्रावृत्त कौन-सा है–

(a) घाट-घाट का पानी
(b) ज्योतिपुंज हिमालय
(c) दरख्तों के पार शाम
(d) सागर के आर-पार

उत्तर (b): विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित यात्रावृत्त 'ज्योतिपुंज हिमालय' (1982 ई.) है। इनके अन्य यात्रा वृत्त इस प्रकार हैं–
1. हँसते निर्झर : दहकती भट्ठी (1966 ई.)
2. हम सफर मिलते रहें (1996 ई.)।

48. महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'पथ के साथी' में निम्नलिखित में किस साहित्यकार का संस्मरण नहीं है–

(a) मैथिलीशरण गुप्त
(b) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(c) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

उत्तर (d): महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'पथ के साथी' में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का संस्मरण नहीं है जबकि मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तथा (रवीन्द्रनाथ टैगोर) नाम से संस्मरण 'पथ के साथी' में उल्लेख है।

49. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को केन्द्र में रखकर लिखी गई पुस्तक 'व्योमकेश दरवेश' के लेखक हैं–

(a) राजदेव सिंह (b) केदारनाथ सिंह
(c) विश्वनाथ त्रिपाठी (d) रमेश कुन्तल मेघ

उत्तर (c): आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को केन्द्र में रखकर लिखी गयी पुस्तक 'व्योमकेश दरवेश' के लेखक विश्वनाथ त्रिपाठी हैं जिसका प्रकाशन वर्ष 2010 है। यह संस्मरण विधा की रचना है।

50. 'रामकृष्ण परमहंस' के जीवन को लक्ष्य करके लिखी गई पुस्तक 'हलचल के पंख' के लेखक हैं–

(a) रामचंद्र तिवारी (b) मोहन अवस्थी
(c) कृष्णबिहारी मिश्र (d) कुबेरनाथ राय

उत्तर (b): 'हलचल के पंख' के लेखक मोहन अवस्थी हैं। कृष्णबिहारी मिश्र ने रामकृष्ण परमहंस की जीवनी 'कल्पतरु की उत्सव लीला' नाम से लिखी है।

51. 'रेखाएँ बोल उठीं'–रेखाचित्र किसने लिखा है–

(a) देवेन्द्र सत्यार्थी (b) शान्तिप्रिय द्विवेदी
(c) शिवपूजन सहाय (d) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

उत्तर (a): 'रेखाएँ बोल उठीं'–रेखाचित्र के लेखक देवेन्द्र सत्यार्थी हैं। जिसका प्रकाशन वर्ष 1949 ई. है। जबकि उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के रेखाचित्र का नाम 'रेखाएं और चित्र' (1955 ई.) है।

52. 'लंका यात्रा का विवरण'–यात्रावृत्त के लेखक हैं–

(a) ठाकुर गदाधर सिंह
(b) गोपालराम गहमरी
(c) स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
(d) राहुल सांकृत्यायन

उत्तर (b): 'लंका यात्रा का विवरण' (1916 ई.) यात्रावृत्त के लेखक गोपालराम गहमरी हैं। राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय और नागार्जुन को आधुनिक हिन्दी साहित्य का घुमक्कड़ वृहत्त्रयी कहा जाता है। राहुल सांकृत्यायन के प्रमुख यात्रावृत्त हैं– मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, किन्नर देश में, घुमक्कड़ शास्त्र, राहुल यात्रावली, यात्रा के पन्ने, एशिया के दुर्गम भूखण्ड, चीन में कम्यून, चीन में क्या देखा।

53. निम्नलिखित आत्मकथाएँ और उनके लेखकों में से कौन-सा युग्म सही है–

(a) सहचर है समय : अमृता प्रीतम
(b) कस्तूरी कुण्डल बसै : प्रभा खेतान
(c) टुकड़े-टुकड़े दास्तान : अमृतलाल नागर
(d) घर की बात : चतुरसेन शास्त्री

उत्तर (c): आत्मकथा 'टुकड़े-टुकड़े दास्तान' (1986 ई.) के लेखक अमृतलाल नागर है। अतः यह युग्म सही है। अन्य युग्मों का सही रूप है–

आत्मकथा	लेखक
सहचर है समय (1991 ई.)	रामदरश मिश्र
कस्तूरी कुण्डल बसै (2002 ई.)	मैत्रेयी पुष्पा
घर की बात (1983 ई.)	रामविलास शर्मा

54. 'आत्मनिरीक्षण' किसकी आत्मकथा है–

(a) वियोगी हरि (b) आचार्य चतुरसेन
(c) सेठ गोविन्ददास (d) वृन्दावनलाल वर्मा

उत्तर (c): 'आत्मनिरीक्षण' (1558 ई.) आत्मकथा के लेखक सेठ गोविन्ददास हैं।

लेखक	आत्मकथा
वियोगी हरि	मेरा जीवन प्रवाह (1948 ई.)
आचार्य चतुरसेन शास्त्री	यादों की परछाइयाँ (1956 ई.)
वृन्दावनलाल वर्मा	अपनी कहानी (1970 ई.)

55. प्रेमचंद की जीवनी 'कलम का मजदूर' के रचनाकार हैं–

(a) अमृतराय (b) मदनगोपाल
(c) शिवरानी देवी (d) विष्णु प्रभाकर

उत्तर (b): प्रेमचन्द की जीवनी 'कलम का मजदूर' के रचनाकार 'मदनगोपाल' हैं। जबकि अमृतराय ने 'कलम का सिपाही' और शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द घर में' नामक जीवनी लिखी। विष्णु प्रभाकर ने 'आवारा मसीहा' नाम से शरतचन्द्र की जीवनी लिखी।

56. ''कविता मनुष्य को स्वार्थ संबंधों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाती है।'' यह कथन किसका है–

(a) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुंदर दास
(d) डॉ. नगेन्द्र

उत्तर (a): ''कविता मनुष्य को स्वार्थ संबंधों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाती है।'' कविता के सन्दर्भ में यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। डॉ. नगेन्द्र ने कहा है ''रसात्मक शब्दार्थ ही काव्य है और उसकी छन्दोमयी विशिष्ट विधा आधुनिक अर्थ में कविता है।''

57. संकलनत्रय के अंतर्गत कौन-सा तत्त्व सम्मिलित नहीं है–

(a) स्थान (b) काल
(c) घटना (d) गीत

उत्तर (d): गीत संकलनत्रय के अन्तर्गत नहीं है। जबकि स्थान, काल तथा घटना तीनों संकलनत्रय के अन्तर्गत आते हैं।

58. 'देवनागरी' का विकास किस लिपि से हुआ है–

(a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी
(c) फारसी (d) रोमन

उत्तर (b): देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। देवनागरी लिपि का विकास क्रम इस प्रकार है–

ब्राह्मी → गुप्त लिपि → कुटिल लिपि → देवनागरी लिपि

59. नाटक को 'पंचम वेद' की मान्यता किसने प्रदान की है–

(a) आचार्य विश्वनाथ
(b) दशरथ ओझा
(c) भरतमुनि
(d) पाणिनि

उत्तर (c): नाटक को पंचम वेद की मान्यता आचार्य भरतमुनि ने प्रदान की है। भरतमुनि रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं और इनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' हैं। साहित्य दर्पण आचार्य विश्वनाथ का ग्रंथ है और पाणिनि ने अष्टाध्यायी नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना की है।

60. ''अर्थवैमल्यं प्रसादः –अर्थ की विमलता ही प्रसाद गुण है।''

उपर्युक्त परिभाषा किस आचार्य की है–

(a) आनंदवर्धन (b) रुद्रट
(c) वामन (d) दण्डी

उत्तर (c): ''अर्थवैमल्यं प्रसादः'' अर्थात् अर्थ की विमलता ही प्रसाद गुण है।'' यह परिभाषा आचार्य वामन ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' में गुणों की चर्चा करते हुए दी है।

Adda247 GET IT ON Google Play

आचार्य	ग्रंथ
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक
रूद्रट	काव्यालंकार
दण्डी	काव्यादर्श

61. भामह के अनुसार काव्य में कितने दोष होते हैं–

(a) पाँच (b) चार
(c) सत्रह (d) नौ

उत्तर (*): भामह ने तीन प्रकार के काव्य दोष माने हैं-
(1) सामान्य दोष- 11
(2) वाणी दोष- 4
(3) अन्य दोष- 11
इनके अनुसार ये सभी एक दूसरे में समन्वित होकर कुल ग्यारह (11) ही रह जाते हैं।
(स्रोत- भारतीय काव्यशास्त्र- निशा अग्रवाल)

62. 'करुण रस' को एकमात्र रस किसने माना–

(a) भरतमुनि (b) भवभूति
(c) मम्मट (d) आचार्य विश्वनाथ

उत्तर (b): 'करुण रस' को एकमात्र रस 'भवभूति' ने माना है। भवभूति ने रस के संदर्भ में करुण रस को प्रधानता देते हुए लिखते हैं कि–
"एको रसः करूण एव।।"
आचार्यो के अन्य ग्रंथ हैं-

आचार्य	ग्रंथ
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र
भवभूति	उत्तररामचरितम्
मम्मट	काव्य प्रकाश
विश्वनाथ	साहित्य दर्पण

**63. "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।"
इसमें कौन-सा अलंकार है–**

(a) विभावना (b) विशेषोक्ति
(c) असंगति (d) दृष्टांत

उत्तर (a): "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।"
पंक्तियों में **विभावना अलंकार** है। जहाँ बिना कारण के कार्य हो वहाँ विभावना होता है।
विशेषोक्ति अलंकार–कारण होने पर भी कार्य न हो जैसे–पानी बिच मीन पियासी।
असंगति अलंकार–जब कारण कहीं हो और कार्य कहीं और (अन्यत्र) हो वहाँ असंगति अलंकार होता है–
जैसे–
दृग उरुझत टुटत कुटुम्ब जुरत चतुर चित प्रीति।
परत गाँठ दुर्जन हिये देखी नई यह रीति।।

**64. "मैं राज्य की चाह नहीं करूँगा।
है जो तुम्हें इष्ट वहीं करूँगा।
संतान जो सत्यवती जनेगी।
राज्याधिकारी वह ही बनेगी॥"
–पंक्तियों में प्रयुक्त छंद है**

(a) इंद्रवज्रा (b) उपेन्द्रवज्रा
(c) वसंततिलका (d) हरिगीतिका

उत्तर (a): दी गयी पंक्ति–"मैं राज्य की चाह.........वह ही बनेगी।।" में इन्द्रवज्रा वर्णिक छन्द है। इन्द्रवज्रा 11 वर्णों वाला वर्णिक छन्द हैं जिसमें तगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु का क्रम होता है।
उपेन्द्रवज्रा भी 11 वर्णों वाला वर्णिक छन्द हैं तथा वसन्ततिलका 14 वर्णों वाला वर्णिक छन्द है। हरिगीतिका 28 मात्राओं वाला सममात्रिक छन्द है।

65. "काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना की ढाँचे में ढली हुई श्रेय की प्रेमरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।" काव्य की यह परिभाषा देने वाले विद्वान हैं–

(a) बाबू श्यामसुंदर दास (b) बाबू गुलाबराय
(c) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद

उत्तर (b): "काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना की ढाँचे में ढली हुई श्रेय की प्रेमरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।" काव्य की यह परिभाषा बाबू गुलाबराय ने दी है।

66. 'दोहा' किस प्रकार का छंद है–

(a) सममात्रिक (b) विषम मात्रिक
(c) संस्कृत वृत्त (d) अर्द्धसम मात्रिक

उत्तर (d): दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। दोहा में चार चरण होता है, जिसके प्रथम और तृतीय चरण में 13-13 मात्राएं और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएं होती हैं। जैसे–
या अनुरागी चित्त की, गति समुझहिं नहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जवल होय।।

**67. उद्धवशतक की
"हमको लिख्यो है कहा, हमको लिख्यो है कहा,
हमको लिख्यो है कहा, कहत सबै लगीं।"
में पुनरूक्ति द्वारा क्या बोध होता है–**

(a) भाव का अपकर्ष (b) भावसंधि
(c) भावोत्कर्ष (d) भावसबलता

Adda247 GET IT ON Google Play

उत्तर (c): जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा रचित 'उद्धवशतक' की निम्न पंक्तियों में–
"हमको लिख्यो है कहा, हमको लिख्यो है कहा,
हमको लिख्यो है कहा, कहत सबै लगीं।"
में पुनरूक्ति द्वारा भावोत्कर्ष का बोध होता है। अन्य दिये गये भाव संगत नहीं हैं।

68. जिस धर्मसाम्य को आधार बनाकर उपमेय-उपमान में एकता स्थापित की जाती है, उसे कहते हैं–
(a) साधारण धर्म
(b) वाचक
(c) उपमान
(d) उपमेय

उत्तर (b): जिस धर्मसाम्य को आधार बनाकर उपमेय-उपमान में एकता स्थापित की जाती है उसे वाचक शब्द कहा जाता है; जैसे–
पीपर पात सरिस मन डोला।
यहाँ पीपर पात- उपमान,सरिस-वाचक शब्द और मन-उपमेय है।

69. 'रोमांच' किस तरह का अनुभाव है–
(a) सात्विक (b) कायिक
(c) आहार्य (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a): 'रोमांच' सात्विक अनुभाव है। सात्विक अनुभाव आठ प्रकार के होते हैं–(1) स्तंभ (2) स्वेद (3) रोमांच (4) स्वरभंग (5) कम्प (6) विवर्णता (7) अश्रु (8) प्रलय।
अनुभाव के चार भेद हैं–
(1) कायिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक।

70. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (रस):	सूची-II (स्थायी भाव):
A. अद्भुत	**1. क्रोध**
B. वीर	**2. शोक**
C. रौद्र	**3. विस्मय**
D. करुण	**4. उत्साह**

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	3	4	1	2
(d)	2	4	1	3

उत्तर (c): दिये गये रस तथा स्थायी भाव का सही सुमेलित क्रम इस प्रकार हैं–

रस	**स्थायी भाव**
अद्भुत	विस्मय
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
करुण	शोक

71. अनुभावों और विभावों की कष्ट-कल्पना किस प्रकार का दोष है–
(a) समास दोष (b) रस दोष
(c) पद दोष (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b): अनुभावों और विभावों की कष्ट-कल्पना रस दोष है। जहाँ कविता में रस की उत्पत्ति बाधित होती है तो उसे रस दोष कहा जाता है।

72. "अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठि पट जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्रधनुष रंग होति॥"
उपर्युक्त दोहे में अलंकार है–
(a) विभावना (b) विशेषोक्ति
(c) अतद्गुण (d) तद्गुण

उत्तर (d): प्रस्तुत दोहे में तद्गुण अलंकार है। जहाँ कोई वस्तु अपना गुण त्यागकर अपने पास की किसी दूसरी वस्तु का गुण ग्रहण कर लेती है, तब तद्गुण अलंकार होता है। जबकि विभावना अलंकार में कारण के बिना ही कार्य होता है। विशेषोक्ति अलंकार में कारण के उपस्थित होने पर भी कार्य नहीं होता है।

73. "चिक्करहि मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजही"–पंक्ति में काव्यगुण है–
(a) प्रसाद (b) ओज
(c) माधुर्य (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b): "चिक्करहि मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजही"–पंक्ति में ओज गुण है।
ओज गुण–चित्त के विस्तार की हेतुभूत दीप्ति ओज गुण कहलाती है। इसमें उत्साह और वीरता का वर्णन होता है।
प्रसाद गुण–ऐसे सरल एवं सुबोध पद जिनको सुनते ही अर्थ की प्रतीति हो जाये प्रसाद गुण कहलाते हैं; जैसे–
सखी वे मुझसे कहकर जाते।
तो क्या वे मुझको अपनी पथ-बाधा ही पाते।।
माधुर्य गुण–कानों को प्रिय लगने वाले काव्य में माधुर्य गुण होता है इसमें प्रेम तथा दाम्पत्य जीवन का वर्णन होता है; जैसे–
"मेरे तो गिरधर गोपाल
दूसरो न कोई।"

74. 'ऋग्वेद' का सही संधि-विच्छेद है–
(a) ऋग + वेद (b) ऋग् + वेद
(c) ऋक् + वेद (d) ऋ + ग्वेद

उत्तर (c): 'ऋग्वेद' का सही संधि विच्छेद–
ऋक् + वेद होगा। इसमें व्यंजन संधि है। अन्य तीनों विकल्प गलत हैं।

75. काव्य-रचना की दृष्टि से महाकवि माघ किन तीन गुणों से विभूषित स्वीकार किए जाते हैं–
(a) सत्व, रज, तम
(b) ओज, प्रसाद, माधुर्य
(c) गौड़ी, वैदर्भी, पांचाली
(d) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य

उत्तर (d): महाकवि माघ को उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य तीन गुणों से विभूषित स्वीकार किया गया है। यथा–
उपमा कालिदासस्य, भारवि अर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं, माघे संति त्रयोगुणः।।

76. 'मदमाता' में कौन सा समास है–
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) द्वंद्व (d) तत्पुरुष

उत्तर (d): 'मदमाता' में तत्पुरुष समास है। तत्पुरुष समास में अंतिम पद/उत्तर पद प्रधान होता है। मदमाता का विग्रह होगा–मद से माता। अन्य उदाहरण–(1) कष्टापन्न–कष्ट को आपन्न (प्राप्त), (2) शराहत–शर से आहत, (3) मुँहमाँगा–मुँह से माँगा, (4) माधव मा (लक्ष्मी) का धव (ति)।
अव्ययीभाव समास का पहला पद प्रधान या अव्यय होता है। जैसे–प्रतिदिन, यावज्जीवन आदि।
कर्मधारय– जिस समास में विशेषण-विशेष्य, उपमेय-उपमान का भाव प्रकट हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे–नीलगाय, परमेश्वर आदि।
द्वंद्व समास में सभी पद प्रधान होते हैं; जैसे–गाय-बैल, भाई-बहन, माँ-बाप इत्यादि।

77. द्वंद्व समास की प्रमुख विशेषता है–
(a) प्रथम पद प्रधान होता है
(b) उत्तर पद प्रधान होता है
(c) दोनों पद प्रधान होते हैं
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c): द्वंद्व समास की प्रमुख विशेषता यह है कि इसके दोनों पद प्रधान होते हैं; जैसे-माता-पिता, इस उदाहरण में माता तथा पिता दोनों पद प्रधान है।
अव्ययी भाव समास में प्रथम पद प्रधान होता है तथा तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होता है।

78. 'पाणिपादम्' का विग्रह है–
(a) पाणि च पादम् च (b) पाणौ च पादौ च
(c) पाणिम् च पादम् च (d) पाणी च पादौ च

उत्तर (d): 'पाणिपादम्' का विग्रह है–पाणी च पादौ च। इस पद में द्वंद समास है। द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। द्वंद समास के तीन भेद होते हैं।
1. इतरेतर द्वंद्व
2. समाहार द्वंद्व
3. वैकल्पिक द्वंद्व

79. 'षडानन' का संधि विच्छेद होगा–
(a) शड् + आनन (b) षड् + आनन
(c) षट् + आनन (d) षडा + नन

उत्तर (c): 'षडानन' का संधि विच्छेद 'षट् + आनन' होगा। जिसमें व्यंजन संधि है। यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तृतीया या चतुर्थ वर्ण आये या य, र, ल, व या कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है; जैसे–
(1) दिक् + गज = दिग्गज, (2) वाक् + जाल = वाग्जाल
(3) षट + दर्शन = षड्दर्शन (4) तत् + रूप = तद्रूप
(5) अच् + अंत = अजन्त

80. 'मगही' किस उपभाषा की बोली है–
(a) राजस्थानी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पूर्वी हिन्दी (d) बिहारी

उत्तर (d): 'मगही' बिहारी हिन्दी उपभाषा की बोली है इसमें मगही, मैथिली, भोजपुरी आती हैं। हिंदी की अन्य उपभाषा एवं बोलियाँ हैं-

उपभाषा	बोली
राजस्थानी	जयपुरी, मेवाती, मालवी, मारवाड़ी
पश्चिमी हिन्दी	ब्रजभाषा, खड़ी बोली, कन्नौजी, बुंदेली, हरियाणवी
पूर्वी हिन्दी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

81. एकाक्षरी भाषा-परिवार से तात्पर्य है–
(a) सेमिटिक-हेमेटिक परिवार
(b) चीनी भाषा परिवार
(c) कॉकेशियन परिवार
(d) ऑस्ट्रो-एसियाटिक परिवार

उत्तर (b): एकाक्षरी भाषा परिवार से तात्पर्य चीनी भाषा परिवार से है। जबकि सेमेटिक-हेमेटिक परिवार, कॉकेशियन परिवार और ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार सभी असंगत हैं।

82. आधुनिक भाषा-विज्ञान का जनक कौन है–
(a) ब्लूमफील्ड (b) जेस्पर्सन
(c) सोस्यूर (d) ग्लीसन

उत्तर (c): आधुनिक भाषा विज्ञान का जनक 'सोस्यूर' हैं। सोस्यूर की प्रसिद्ध पुस्तक ''कोर्स इन जनरल लिंग्विस्टिक'' है।

83. निम्नलिखित आधुनिक भाषाओं में से किसका संबंध अपभ्रंश की पैशाची बोली से है–

(a) राजस्थानी (b) गुजराती
(c) पंजाबी (d) बंगाली

उत्तर (c): आधुनिक भाषाओं में 'पंजाबी' भाषा का संबंध 'पैशाची अपभ्रंश' से है–

बोली (उपभाषा)	**अपभ्रंश**
राजस्थानी	शौरसेनी
गुजराती	शौरसेनी
बंगाली, बिहारी	मागधी

84. निम्नलिखित में से असत्य कथन चुनिए–

(a) रीवा, सतना, शहडोल–बघेली के क्षेत्र हैं।
(b) वर्धा की राष्ट्रभाषा सुधार समिति की ओर से देवनागरी में जो सुधार हुआ, वह 'स्वरखड़ी' के नाम से जाना जाता है।
(c) खड़ी बोली का एक अन्य नाम 'कौरवी' है।
(d) राजस्थानी उपभाषा का विकास पैशाची अपभ्रंश से हुआ है।

उत्तर (d): दिये गये कथनों में असत्य कथन है–
'राजस्थानी उपभाषा का विकास, पैशाची अपभ्रंश से हुआ है।' जिसका सही रूप इस प्रकार होगा–'राजस्थानी उपभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।'

85. भोजपुरी बोली की उत्पत्ति हुई है–

(a) अर्द्धमागधी अपभ्रंश से
(b) मागधी अपभ्रंश से
(c) शौरसेनी अपभ्रंश से
(d) ब्राचड़ अपभ्रंश से

उत्तर (b): भोजपुरी बोली की उत्पत्ति 'मागधी अपभ्रंश' से हुई है। अन्य भाषाओं का विकास क्रम है-

अपभ्रंश	**उत्पन्न बोली**
अर्द्धमागधी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
मागधी	मैथिली, मगही, भोजपुरी
शौरसेनी	ब्रजभाषा, खड़ी बोली, राजस्थानी
ब्राचड़	सिन्धी, लहँदा, पंजाबी

86. देवनागरी में 'अ' के बारह खड़ी का सुझाव किसने दिया था–

(a) नरेन्द्र देव (b) डॉ. श्यामसुंदर दास
(c) काका कालेलकर (d) विनोबा भावे

उत्तर (c): देवनागरी लिपि में 'अ' की बारह खड़ी का सुझाव सावरकर बन्धुओं द्वारा दिया गया था किन्तु विकल्प न होने के कारण काका कालेलकर सही उत्तर होगा क्योंकि इस सुझाव समिति की अध्यक्षता काका कालेलकर द्वारा ही की गयी थी।

87. जिन ध्वनियों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें कहते हैं–

(a) ध्वनि (b) प्रतिध्वनि
(c) वाणी (d) स्वनिम

उत्तर (d): जिन ध्वनियों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें स्वनिम कहते हैं। जबकि ध्वनि भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

88. झाँसी, जालौन, हमीरपुर में कौन-सी बोली प्रचलित है–

(a) बुंदेली (b) कन्नौजी
(c) ब्रजभाषा (d) मालवी

उत्तर (a): झाँसी, जालौन, हमीरपुर में बुन्देली बोली प्रचलित है। जबकि कन्नौजी–इटावा, हरदोई, कानपुर में तथा ब्रजभाषा–मथुरा, आगरा में प्रचलित है।

89. गएल, भएल आदि किस बोली की किस तरह की क्रियाएँ हैं–

(a) भोजपुरी, भूतकालिक
(b) अवधी, वर्तमानकालिक
(c) ब्रजभाषा, भूतकालिक
(d) बुन्देली, भविष्यकालिक

उत्तर (a): गएल, भएल आदि भोजपुरी बोली की भूतकालिक क्रियाएं हैं।

90. कौन-सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है–

(a) बंगला (b) पंजाबी
(c) मराठी (d) गुजराती

उत्तर (c): 'मराठी भाषा' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इसके अतिरिक्त देवनागरी लिपि में हिन्दी, संस्कृत, नेपाली भी लिखी जाती हैं। जबकि पंजाबी भाषा गुरूमुखी लिपि में और गुजराती–गुजराती लिपि में और बंगला–बांग्ला लिपि में लिखी जाती हैं।

91. 'क' व्यंजन के विषय में निम्न में से कौन-सा सही है–

(a) अल्पप्राण, अघोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि
(b) महाप्राण, घोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि
(c) अल्पप्राण, घोष, संघर्षी, तालव्य ध्वनि
(d) महाप्राण, अघोष, संघर्षी, कण्ठ्य ध्वनि

उत्तर (a): 'क' व्यंजन के विषय में अल्पप्राण, अघोष, स्पर्शी, कण्ठ्य ध्वनि सही है। जबकि अन्य सभी त्रुटिपूर्ण हैं।

92. ड़, ढ़ ध्वनियों के विषय में कौन-सा कथन शुद्ध है–

(a) ये तालव्य ध्वनियाँ हैं।
(b) ये मूर्धन्य उत्क्षिप्त ध्वनियाँ हैं।

(c) इनका प्रयोग शब्द के आरम्भ, मध्य तथा अंत में (सर्वत्र) किया जाता है।
(d) दोनों महाप्राण हैं।

उत्तर (b): ड़, ढ़ ध्वनियों के विषय में शुद्ध कथन है– ये मूर्धन्य उत्क्षिप्त ध्वनियाँ हैं। शेष तीनों कथन त्रटिपूर्ण हैं।

93. उच्चारण की दृष्टि से 'श्, ष्, स्' व्यंजन किस प्रकार के हैं–

(a) अन्तस्थ (b) वर्त्स्य
(c) ऊष्म (d) तालव्य

उत्तर (c): उच्चारण की दृष्टि से 'श्, ष्, स् व्यंजन ऊष्म व्यंजन हैं। जबकि य् र् ल् व् अन्तःस्थ व्यंजन तथा च् छ् ज् झ् ञ् तालव्य व्यंजन हैं।

94. उच्चारण स्थान के आधार पर 'ञ' व्यंजन है–

(a) तालव्य (b) मूर्धन्य
(c) कण्ठस्थ (d) ओष्ठ्य

उत्तर (a): उच्चारण की दृष्टि से ञ तालव्य व्यंजन है।
तालव्य व्यंजन– च् छ् ज् झ् ञ् हैं
कण्ठ व्यंजन– क् ख् ग् घ् ङ्
मूर्धन्य व्यंजन– ट् ठ् ड् ढ् ण्
ओष्ठ्य व्यंजन– प् फ् ब् भ् म्

95. हिन्दी में 'अनुस्वार' किस ध्वनि का सूचक नहीं है–

(a) ङ (b) ञ
(c) ण (d) य

उत्तर (d): हिन्दी में पंचमाक्षरों ङ, ञ, ण, न, म के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होता है, जबकि य तथा व अर्द्धस्वर हैं। अतः 'य' अनुस्वार का सूचक नहीं है।

**96. ''कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैनन ही सौं बात।।''
उपर्युक्त दोहे में प्रयुक्त मुख्य क्रियापदों की संख्या है–**

(a) एक (b) दो
(c) सात (d) आठ

उत्तर (c): ''कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैनन ही सौं बात।।''
इस दोहे में सात मुख्य क्रिया पद है–
(1) कहत (कहना) (2) नटत (नकारना) (3) रीझत (रीझना) (4) खिझत (खिझना) (5) मिलत (मिलना) (6) खिलत (खिलना) (7) लजियात (लजाना) जबकि एक गौण क्रिया पद है-बात करना।

97. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विशेषण है–

(a) मेजपोश (b) मिठास
(c) सौतेला (d) सरलता

उत्तर (c): 'सौतेला' शब्द विशेषण है जैसे-सौतेला भाई, जबकि मेजपोश, मिठास और सरलता तीनों संज्ञाएं हैं।

98. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द सर्वनाम नहीं है–

(a) कौन (b) कोई
(c) उसने (d) दसगुना

उत्तर (d): 'दसगुना' शब्द संख्यावाचक विशेषण है। जबकि कौन, कोई, उसने तीनों सर्वनाम हैं।

99. कतिपय हिन्दी वैयाकरणों द्वारा 'संज्ञा प्रतिनिधि' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है–

(a) क्रिया के लिए
(b) विशेषण के लिए
(c) संज्ञा के भेद के लिए
(d) सर्वनाम के लिए

उत्तर (c): कुछ हिन्दी वैयाकरणों द्वारा 'संज्ञा प्रतिनिधि' शब्द का प्रयोग सर्वनाम लिए प्रयोग किया जाता है क्योंकि संज्ञा स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

100. 'जिस व्यक्ति का चित्त किसी भी देश, काल और परिस्थिति में एकसमान रहता है', उसके लिए उपयुक्त शब्द है–

(a) अलौकिक (b) स्थिरचित्त
(c) शांतचित्त (d) समदर्शी

उत्तर (c): 'जिस व्यक्ति का चित्त किसी भी देश, काल और परिस्थिति में एक समान रहता है', उसके लिए एक शब्द शांतचित्त उपयुक्त शब्द है।

वाक्यांश	**एक शब्द**
वह जो सभी को समान दृष्टि से देखता है	समदर्शी
जो इस लोक का न हो	अलौकिक

101. 'दुर्व्यवहार' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–

(a) दुः (b) वि
(c) अव (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d): दुर्व्यवहार शब्द में 'हार' मूल शब्द है और दुः, वि, अव तीनों उपसर्ग लगे हैं। जैसे–
दुः + वि + अव + हार = दुर्व्यवहार

102. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विदेशी स्रोत का है–

(a) रोशनदान (b) आलस
(c) उलूक (d) आज

उत्तर (a): रोशनदान शब्द विदेशी स्रोत का शब्द है। जबकि आलस तद्भव शब्द है, उलूक तत्सम एवं 'आज' भी तद्भव शब्द है।

103. 'सामिष' का विलोमार्थक शब्द है–

(a) आमिष (b) अनमिष
(c) निरामिष (d) निरमिष

Adda247 GET IT ON Google Play

उत्तर (c): सामिष का विलोमार्थक शब्द 'निरामिष' होता है जबकि आमिष, अनमिष तथा निरमिष तीनों त्रुटिपूर्ण हैं।

104. निम्नलिखित में से 'अभ्र' का पर्यायवाची है–

(a) रत्नाकर (b) बादल

(c) आकाश (d) पवन

उत्तर (c): 'अभ्र' शब्द आकाश का पर्यायवाची हैं आकाश के अन्य पर्यायवाची– नभ, गगन, आसमान, अम्बर, व्योम, अनन्त, अन्तरिक्ष आदि।

बादल के पर्यायवाची–मेघ, घन, नीरद, पयोद आदि।

पवन के पर्यायवाची–हवा, वायु, समीर, वात, मारुत आदि।

रत्नाकर के पर्याय–समुद्र, सागर, जलधि, सिन्धु आदि।

105. किस शब्द में 'तद्धित' प्रत्यय का योग है–

(a) सुनहरा (b) पाठक

(c) लड़ाई (d) दर्शनीय

उत्तर (a): सुनहरा शब्द में तद्धित प्रत्यय का योग है। तद्धित प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के साथ किया जाता है, जबकि धातु या क्रिया के साथ कृदन्त प्रत्यय का प्रयोग होता है।

सुनहरा = सोना + हरा (संज्ञा + तद्धित प्रत्यय)

पाठक = पठ् + अक (धातु + कृदन्त प्रत्यय)

लड़ाई = लड़ + आई (धातु + कृदन्त प्रत्यय)

दर्शनीय = दृश् + अनीय (धातु + कृदन्त प्रत्यय)

106. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है–

(a) मैं अपना कार्य स्वयं कर देता हूँ।

(b) परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होना चाहिए।

(c) शायद वह अवश्य आएगा।

(d) भारत में अनेक जाति के लोग रहते हैं।

उत्तर (d): दिये गये वाक्यों में शुद्ध वाक्य है–

भारत में अनेक जाति के लोग रहते हैं।

अन्य वाक्यों के शुद्ध रूप इस प्रकार हैं–

(1) मैं अपना कार्य स्वयं कर लेता हूँ।

(2) परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होनी चाहिए।

(3) शायद वह अवश्य आए।

107. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है–

(a) पुष्पांजली (b) मंत्रीपरिषद

(c) वाल्मीकि (d) अध्यात्मिक

उत्तर (c): वाल्मीकि शब्द की वर्तनी शुद्ध है। अन्य शुद्ध वर्तनी के शब्द इस प्रकार हैं–

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
पुष्पांजली	– पुष्पाञ्जलि (पुष्पांजलि)
मंत्री परिषद	– मंत्रिपरिषद्
अध्यात्मिक	– आध्यात्मिक

108. ''सिर पर पाँव रखकर भागना''–मुहावरे का सही अर्थ है–

(a) सर्कस दिखाना (b) तुरंत भाग जाना

(c) करतूत दिखाना (d) चोट पहुँचाना

उत्तर (b): 'सिर पर पाँव रखकर भागना' मुहावरे का सही अर्थ है- तुरंत भाग जाना।

जैसे-लोगों का शोर सुनकर चोर सिर पर पाँव रखकर भाग गया।

109. निम्नलिखित में से माघ विरचित कृति है–

(a) बुद्धचरितम् (b) स्वप्नवासवदत्तम्

(c) रघुवंशम् (d) शिशुपालवधम्

उत्तर (d): 'शिशुपालवधम्' माघ विरचित कृति है।

रचना	रचनाकार
बुद्धचरितम्	अश्वघोष
स्वप्नवासवदत्तम्	भास
रघुवंश	कालिदास

110. ''नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा.....'' के योग में प्रयुक्त होती है–

(a) द्वितीया विभक्ति (b) चतुर्थी विभक्ति

(c) तृतीया विभक्ति (d) पंचमी विभक्ति

उत्तर (b): ''नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा.....'' के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसे–हरये नमः। शेष विभक्तियों का सम्बन्ध इस सूत्र से नहीं है।

111. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना श्रीहर्ष की नहीं है–

(a) शिशुपालवध

(b) अर्णव वर्णन

(c) हिन्द प्रशस्ति

(d) नवसाहसांकचरित चम्पू

उत्तर (a): शिशुपालवधम् रचना श्रीहर्ष की नहीं है बल्कि 'माघ' की रचना है। जबकि अर्णव वर्णन, छन्द प्रशस्ति, नवसहसाङ्कचरित चम्पू श्रीहर्ष की रचनाएं हैं।

112. ''गाँव के दोनों ओर रास्ते हैं''–का संस्कृत में सही अनुवाद होगा–

(a) ग्रामस्य परितः मार्गाणि सन्ति

(b) ग्रामम् उभयतः मार्गो स्तः

(c) ग्रामम् उभयतः मार्गः सन्ति

(d) ग्रामस्य उभयतः मार्गो स्तः

Adda247 GET IT ON Google Play

उत्तर (c): ''गाँव के दोनों ओर रास्ते हैं'' का संस्कृत में सही अनुवाद होगा–''ग्रामम् उभयतः मार्गः सन्ति''। अन्य तीनों दिये अनुवाद त्रुटिपूर्ण हैं।

113. कालिदास की किस रचना को 'दूतकाव्य' माना जाता है–

(a) अभिज्ञानशाकुंतलम् (b) विक्रमोर्वशीयम्
(c) मेघदूतम् (d) मालविकाग्निमित्रम्

उत्तर (c): कालिदास की मेघदूत को 'दूतकाव्य' माना जाता है। जबकि अभिज्ञानशाकुंतलम्, विक्रमोर्वशीयम् तथा मालविकाग्निमित्रम् तीनों रचनाएं कालिदास के नाटक हैं।

114. निम्नलिखित में से कौन-सा संस्कृत वाक्य कारक प्रयोग की दृष्टि से अशुद्ध है–

(a) सीता रावणं अकुप्यत (b) धनं परिश्रमेण भवति
(c) मह्यम पुस्तकं देहि (d) रामः स्वाग्रजं अतिशेते

उत्तर (a): कारक प्रयोग की दृष्टि से अशुद्ध वाक्य है–

सीता रावणं अकुप्यत। इस वाक्य में क्रुध् धातु का प्रयोग किया गया है और क्रुध् धातु के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति होती है। अतः इसका शुद्ध रूप इस प्रकार होगा–

सीता रावणाय अकुप्यत।

शेष तीनों वाक्य शुद्ध हैं।

115. 'गम्' धातु का विधिलिङ्, प्रथम पुरुष एकवचन में सही रूप है–

(a) गच्छेत
(b) गच्छेत्
(c) गच्छतु
(d) गच्छेताम्

उत्तर (b): गम् धातु का विधिलिङ्ग प्रथम पुरुष एकवचन में सही रूप–गच्छेत् है।

गम् धातु विधिलिङ्ग–

प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

116. कालिदास के नाटकों में स्त्रियों तथा निम्नश्रेणी के पात्र किस भाषा में बोलते हैं–

(a) संस्कृत (b) प्राकृत
(c) संस्कृत मिश्रित प्राकृत (d) अशुद्ध संस्कृत

उत्तर (b): कालिदास के नाटकों में स्त्रियाँ तथा निम्न श्रेणी (दास, दासी तथा अधम पात्र) के पात्र प्राकृत भाषा में बोलते हैं। जबकि मुख्य पात्र, कुलीन पात्र तथा उच्चवर्गीय श्रेष्ठ पात्र विशुद्ध संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं।

117. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रचना भवभूति की है–

(a) उत्तररामचरितम् (b) कादम्बरी
(c) किरातार्जुनीयम् (d) नैषधीयचरितम्

उत्तर (a): 'उत्तररामचरितम्' भवभूति की रचना है। इनकी दो अन्य प्रमुख रचनाएँ–मालतीमाधवम् तथा महावीरचरितम् है।

रचना	रचनाकार
कादम्बरी	बाणभट्ट
किरातार्जुनीयम्	भारवि
नैषधीय चरितम्	श्री हर्ष

118. निम्नलिखित में से कौन रचनाकार ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित नहीं है–

(a) महादेवी वर्मा (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) रामधारी सिंह दिनकर

उत्तर (b): दिये गये रचनाकारों में हजारीप्रसाद द्विवेदी को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया गया है जबकि सुमित्रानन्दन पंत को उनकी रचना 'चिदम्बरा' के लिए वर्ष 1968 में, रामधारी सिंह दिनकर को 'उर्वशी' के लिए वर्ष 1972 में तथा महादेवी वर्मा को उनकी रचना 'यामा' के लिए वर्ष 1982 ई. में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हजारीप्रसाद द्विवेदी को 1973 ई. में उनके निबंध 'आलोक पर्व' पर 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला।

119. प्रसिद्ध समीक्षक रमेश कुंतल 'मेघ' को उनकी किस कृति के लिए वर्ष 2017 का 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया–

(a) अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा
(b) साक्षी है सौन्दर्य प्राश्निक
(c) क्योंकि समय एक शब्द है
(d) विश्वमिथकसरित्सागर

उत्तर (d): प्रसिद्ध समीक्षक रमेश कुंतल 'मेघ' को उनकी कृति 'विश्व मिथक सरित्सागर' के लिए वर्ष 2017 का 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्रदान किया गया। अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा (1977 ई.), साक्षी है सौन्दर्य प्राश्निक (1980 ई.) क्योंकि समय एक शब्द है (1975 ई.) रमेश कुंतल मेघ की समीक्षात्मक कृतियां हैं।

120. वर्ष 2017 का ज्ञानपीठ पुरस्कार निम्नलिखित में से किस लेखिका को दिया गया है–

(a) कृष्णा सोबती (b) मृदुला गर्ग
(c) चित्रा मुद्गल (d) मन्नू भण्डारी

उत्तर (a): वर्ष 2017 का ज्ञानपीठ पुरस्कार हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती को उनके सम्पूर्ण साहित्य के लिए प्रदान किया गया। हिन्दी साहित्य में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम लेखिका महादेवी वर्मा (1982 ई.- यामा) हैं।